चारुदत्त

(1) अनुवाद / अभिज्ञानविजय

① विदूषक का चरित्र चित्रण — चारुदत्त के आधार पर।

संस्कृत नाट्य साहित्य में विदूषक भी एक महत्वपूर्ण था अत्यन्त ही प्रसिद्ध पात्र होता है। यह पात्र संस्कृत नाट्य साहित्य का एक ऐसा सर्वप्रिय पात्र है जिसके बिना संस्कृत नाट्य साहित्य नीरस और अपने आप में अपूर्णता को प्राप्त कर लेता है। संस्कृत नाट्य साहित्य तो अपने आप में सुकुमार, सरस और सहज गम्य तो है ही, फिर भी विदूषक उस नाट्य साहित्य की मृदुता को बढ़ाने में चार चाँद लगा देता है।

संस्कृत नाटकों की समृद्ध परम्परा में एकाध नाटके में उस पात्र का सर्वथा अभाव रहा है। जहाँ भी उस पात्र को नाटककारों ने अपने नाटक में स्थान नहीं दिया है, उन-उन नाटकों से पाठक उन नाटकों को पढ़ते-पढ़ते विदूषक की आवश्यकता पर बल देते हैं और एक खास अनुभव करते हैं।

संस्कृत नाट्य साहित्य में विदूषक अपनी विनोदप्रियता और हँसमुख स्वभाव के लिए प्रसिद्ध है। यह हास्य रस के पाठकों के मन को बहुत ही लगन के साथ रमाए हुए रहता है। उसकी उपस्थिति के कारण पाठक ऊबते नहीं हैं। विदूषक को भोजन प्रिय होता है और हास्य उसके जीवन की शक्ति होती है। संस्कृत नाटकों में विदूषक नायक का अन्तरंग मित्र होता है। इनका प्रमुख कार्य अपने स्वामी की विपरीत परिस्थितियों में भी मस्तिष्क को शान्ति बनाए रखना है। वह नायक का अभिन्न मित्र होता है।

वह नायक की रक्षा और सहायता भी करता है, जब नायक उदास और खिन्न तथा अन्यमनस्क हो जाता है तब विदूषक अपने वाक्चातुर्य से बड़े ही सहज ढंग से नायक के मन की उदासी को दूर कर देता है। उसकी जीवनी शक्ति

में नई स्फूर्ति का संचार कर देता है। उसकी अन्यमनस्कता को भंग कर देता है। वैसे तो विदूषक के कार्य बहुत ही न्यून है। फिर भी बड़े ही मूल्यवान एवं कर्तव्ययुक्त है। यदि विदूषक अपने के कार्यों ~~बहुत ही न्यून हैं। फिर भी बड़े ही मूल्य~~ में थोड़ी शिथिलता ला देता है, तो नायक की नौका डगमगाने लगती है। अतः विदूषक का न्यून कार्य भी उस समय बड़ा ही भारयुक्त हो जाता है।

'चारुदत्त' नाटक के विदूषक का नाम आर्य मैत्रेय है। वह जाति का ब्राह्मण है। वह नायक (चारुदत्त) का घनिष्ठ मित्र है। वह नायक का प्रधान सहायक भी है।

मैत्रेय, भोजन प्रिय और विनोदी स्वभाव का है फिर भी इस नाटक में वह अपने विशुद्ध आचरण और अपने विशुद्ध सुव्यवहार से युक्त दिखाई पड़ता है। वह अपने सुन्दर व्यवहार और निष्कपट आचरण से चारुदत्त की भयंकर परिस्थितियों में भी पग-पग पर हास्य रस की फुलझड़ियाँ बिखेर कर उसे आनन्दित करता है। वह सुख और दुःख में समान रूप से चारुदत्त का सहभागी है।

अपने नायक के सुखमय जीवनकाल में अतल-नीच सुख का उपयोगी विदूषक विपत्ति काल में डिगने वाला नहीं है। वह किसी दूसरे के यहाँ जाना, भोजन करना, निमंत्रण स्वीकार करना नहीं चाहता है। यही कारण है कि सूत्रधार के निमंत्रण दिए जाने पर वह स्वीकार नहीं करता है। वह कहता है कि चारुदत्त जैसे व्यक्ति के यहाँ रहने वाले भी लोग निमंत्रण देने (भोजन खिलाने) का साहस करता है जबकि उसे अब पेट भर भोजन का ठिकाना नहीं है। वह जीवन की गहराइयों तक पैठकर जीवन के सत्य को प्रकट करता है।

वह हमेशा अपने नायक की सिद्धि की कामना करता रहता है।

वह अपने नायक को किसी प्रकार भी दुःखी नहीं देखना चाहता है और नहीं ही अपने ओर से दुःखी करने वाला कार्य करता है। यही कारण है कि वह रदनिका के अपमान का समाचार चारुदत्त को नहीं बतलाता है। वह समझता है कि ऐसा करने से उसे मानसिक कष्ट होगा। वह चारुदत्त की बदनामी नहीं कराना चाहता। वह दीपक के पूछ जाने पर यह नहीं कहता कि दीपक में तेल नहीं था। वह कहता है कि यह दीपिका तो गणिका के प्रेम की तरह निःसन्देह हो गई।

विदूषक कोपी स्वभाव का है, पर वह जितनी जल्दी क्रोध में आता है उतनी ही जल्दी वह शान्त भी हो जाता है। प्रथम अंक में ही रदनिका के अपमान से क्रोधित होकर वह शकार और विट को मारने दौड़ता है, परन्तु जब विट उससे प्रार्थना करते हुए गिड़गिड़ाने लगता है तो उसका क्रोध एकदम शांत हो जाता है।

वह वसंत सेना को धरोहर नहीं रखना चाहता है फिर भी चारुदत्त के कहने पर वह उसे रख लेता है। वह अपनी गलती स्वीकार नहीं करता है। उसकी मूर्खता से ही चरोहर चोरी चली गई। फिर भी वह इसमें अपनी मूर्खता नहीं मानता है।

चारुदत्त द्वारा अपनी बहुमूल्य मुक्तावली बदले में दिए जाने पर वह मना करता है। वह इतनी मूल्यवान वस्तु नहीं देना चाहता। वह मिथ्यावादी नहीं है फिर भी अपने मित्र के कहने पर वह उसके चरित्र की रक्षा करने के लिए झूठ बोलता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चारुदत्त नाटक में विदूषक एक परमप्रिय मित्र एक सच्चे स्वाभिमान सेवक की तरह सर्वत्र दिखाई पड़ता है उसका विनोदी स्वभाव सर्वत्र दिखाई पड़ता है विपत्तियों में भी धैर्य धारण कर दूसरे की सहायता करना वह अपने जीवन का परम लक्ष्य समझता है वह संगीत और सौन्दर्य का उपासक और कला प्रेमी पात्र है आधी रात तक वह चारुदत्त के साथ जगा रहकर संगीत सुनाता रहता है

चारुदत्त के सो जाने के बाद ही वह सोता है वह धन के प्रति उदासीन है यदि वह लालची और धन के प्रति लोभी होता तो वह चारुदत्त का साथ नहीं देता। वह उन्हें छोड़कर अन्यत्र चला जाता जैसे चारुदत्त के अन्य सेवक सम्वाहक इत्यादि चारुदत्त के हटने पर चले जाते हैं परन्तु चारुदत्त के कहने पर भी वह उनके यहाँ से हटता नहीं है यह उसकी महानता ही कही जाएगी इससे भी चारुदत्त के प्रति विदूषक का सच्चे प्रगाढ़ स्नेह का पता चलता है

महाकवि भास की परम बुद्धिमत्ता का परिचायक यह विदूषक भी एक अद्भुत पात्र के रूप में वर्णित है सत्य ही कहा गया है- "संस्कृतनाटकेषु विदूषकधन्यः।"